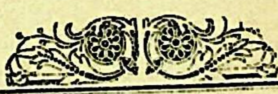
व
५८८३

व
९६८

३

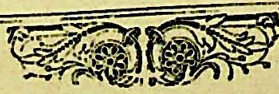




# योग वासिष्ठ

## ( कोष )

—:०:—



यह कोष अधिकारियों के सुगम बोधार्थ निर्मित हुआ है।

उच्चश्रेणी के ग्रन्थों में भावार्थ के जान लेने से पूर्ण बोध प्राप्त हो सकता है।

इस लिये योग वासिष्ठ के कठिन २ पदों का भावार्थ अकार (अ) आदि वर्णों के क्रम से लिखा गया है।



प्रकाशक—

बाबू जगदीशप्रसाद सिंघल

सिर्फ़ टाइटल पेज शान्ती प्रेस अलीगढ़ में छपा।

# योग वासिष्ठ

# कोष



**पद — पदार्थ**

## ( अ )

अकृत्रिम=स्वतः सिद्ध, अनादि
अकिंचन्=अफुर, अच्युत।
अकस्मात्=अचानक, दैवयोगसे
अकाण्ड=विना समय प्रलय।
अकृतज्ञ=किये को न जाने।
आख्यान=विशेष कथन।
आख्यात=प्रतीति, ज्ञान।
अखण्ड=भेद रहित, एक रस।
अघमर्षण=पाप विनाशक।
अगम्य=मन, वाणी का अगोचर
अचित्य=चिंतन में न आवे।
अच्युत=निर्विकार, अपरिणामी
अचेतन=अफुर, जड़।
अचैत्य=दृश्य से रहित।
अजर=क्षीण न होवे।
आर्जव=सीधापन, सरल।
अजड़धर्मा=चैतन्य वपु।
ओज=आत्मक बल, कान्त
अनंग=कामदेव, अंगरहित
अजात जाति=न जन्माभास।
आगमापाई=आने जाने वाले
आडंबर=विस्तार, फैलाव।
अपरिणामी=एकरस रहे।
अणु=सूक्ष्म, मन का अविषय
अणुतन्मात्रा=सूक्ष्म तत्व।
अलक्ष्य=दुर्लक्ष, अज्ञात।
अज्ञात=अप्रत्यक्ष, न जाना जाय
अति सूक्ष्म=बुद्धिसे अगोचर।
अति व्याप्ति=अलक्ष्य में वर्ते।
आत्म तत्व=अपना स्वरूप।
आत्म व्यापनी बुद्धि=ज्ञान मयी
आत्मवान=आत्म निष्ठ, ज्ञानी
आत्म मौन=आत्मनिश्चय, निष्ठा
आत्मारामी=ब्रह्म अभ्यासी।
अंतर्धान=विलयहोना, छिपना
आस्था=सत्य श्रद्धा।
अर्थात्=अर्थ यह, इसी अर्थ।
अर्थापत्ति=अर्थ से जानना
अदृश्य=चक्षु अगोचर, न दीखे
आधार=आश्रय।
आधेय=आश्रित रहे।

अर्द्ध सुषुप्ति=अर्द्धप्रबुद्ध, तंद्रा ।
अर्द्ध प्रबुद्ध = कोमल ज्ञानी ।
आदि वपु=प्रथम रूप, मूल तनु
अद्वैत = एक, भेद रहित ।
अध्यारोप = कल्पना करना ।
आदि जीव = ईश्वर, ब्रह्मा ।
अधिकरण = आश्रय ।
अधिदैवक=देवता, जन्य,पीड़ा
अधो = नीचे. पतित ।
अध्यात्म=आत्म विद्या, ज्ञान ।
अर्धाङ्ग = आधा अंग मारा जावे
अधिष्ठान=वास्तवरूप, आश्रय ।
आधि = मन की पीड़ा ।
अपरिच्छिन्न = व्यापक ।
अपाय = लय होवे, पाप ।
अनुष्ठान = क्रिया को साधना ।
अटवी = बगीचा, वन ।
अनियत = बिना नियम ।
अनुभव = ज्ञान, बोध ।
अन्वय = व्यापक, अनुस्यूत ।
अनर्थ=दुःख, दोष समूह ।
अनीप्सित = निरच्छित ।
अन्तर्वाहक=सूक्ष्म वृत्ति ।
अत्यंताभाव=तीनों कालोंमें नहीं
अन्द्रोरा = स्पष्ट श्रोता ।
अटूट बोध = ठीक ज्ञान ।
अंतर = आत्म, हृदय ।
अन्तरिक्ष = आकाश, स्वर्ग ।

अंग = प्रिय, स्वरूप, अवयव ।
अन्तवंत = नाशवान ।
अन्तर्मुख = आत्म चिंतन ।
अन्तःपुर = मंदिर, अंतरपूर्ण ।
अन्योन्य = परस्पर ।
अनुभवात्मक = ज्ञानस्वरूप ।
अनासक्त=आसक्ति रहित,
अनन्य = एक रूप, अभेद ।
अनामारब्ध=कथन से अतीत ।
अनुलोम=अन्तर मुखता ।
अनुसंधान=स्मर्ण, यादगारी
अनच्छित=इच्छाविना, अचानक
अनुत्तम = अत्यंत श्रेष्ट ।
अतुच्छ = सत्य, पूर्ण ।
अनुगत=सर्वत्र व्यापक
अनागत=भिन्न हो, बाहिर ।
अनीश्वरता=परतंत्र, जीवपना
अमनशक्ति=वासना का बाध ।
अमानता=गर्व रहित, निर्मान ।
अन्यथा=और प्रकार, ।
अनीश्वर वादी=नास्तिक मनुष्य
अन्यायी=अश्रेष्ठ, कपटी ।
अनायास=बिना परिश्रम के ।
अनुत्तरज्ञान=त्रैकालिकज्ञान ।
अनुस्यूत = व्यापक, पूर्ण ।
अनेक शक्ति=विशेष सामर्थ्य ।
अन्यत = दूसरा, भिन्न ।
आपातरमणीय=नाशतक सुन्दर

आप्तकामता=सत्य की प्राप्ति ।
अपरमित = अंतबिना, अपार ।
अपराजित = न जीता जाय ।
अपूर्व = नवीन, अद्भुत ।
अतिशय = बड़ा उत्तम ।
अप्रमेय = प्रमाण का अगोचर ।
अपाय = लयहोना, पाप ।
आपदा = दुःख, विपत्ति
आवेश = प्रवेश, घुसना ।
अवाच्य = वाणि का अविषय ।
अवलम्ब = आश्रय, सहारा ।
आवृत = तरङ्ग आदि ।
अबोध = अज्ञान, जड़ता ।
आभा = प्रतिबिंब, भाषित ।
अभानापादक = आवर्ण ।
अभीष्ठ = सुख का साधन ।
अभाव = असत्य, नहीं होना ।
आरम्भ = बहुत मिल कर होवे
अभ्यास = पुनः२आवृत्ति, तत्परता
अभिमत = सम्मति, निश्चय ।
अभिलाषा = विशेष आशा ।
अमृतरूप = अविनाशी, सत्य ।
अम्बूकण = जल का कनका ।
अरोग्य = आरोग्य रहना ।
अमनन = मनन रहित ।
आर्यता = सोधापन, श्रेष्ठता ।
आरूढ़=स्थित, निष्ठा ।
आरम्भ=प्रवृत्ति, रचना !

आलिंगन=स्पर्श, मिलना ।
अव्याप्ति=एक देश वर्तीदोष ।
आविर्भाव=उदय, प्रगट होना ।
आवृत=आवेश, लिप्त हुआ ।
आवर्या=ढ़का हुआ, परोक्ष ।
अव्याकृत=माया, सूक्ष्म ।
अविरुद्ध = सदृश, अनुसार ।
अविद्यक = अविद्या रचित ।
अवलोकन=देखना, दर्शन ।
अवयव, अवयवी=अंग, अंगी ।
अबोध बोध=अज्ञानसे जागना।
अवश्यमेव=अमिट, जरूर ।
अविच्छिन्न=भेदसहित, अव्यापक
अव्यक्त=निराकार, अशरीर ।
अवसान = विलय, अंत, बाध ।
असत्वापादक = असत्यकापड़दा
अवसर = योग्यसमय ।
आविष्टित=मिला हुआ ।
अवकाशरूप=भेद सहित, पोल ।
अविभाग = भिन्न २ न होना ।
अवरोध = रुकजाना, ठहरना ।
अविद्या=अज्ञानरूप आवर्ण ।
अवेदनसत्ता=अज्ञान सहित ।
अवाच्य = न कहा जाय ।
अविदित = अज्ञात, न जाना ।
अशून्य= चैतन्य, सत्य वस्तु ।
अशेष=सम्पूर्ण, शेष रहित ।
आशय = तात्पर्य, भाव ।

आश्रय=सहारा, आधार।
असम्यक्=मिथ्या, झूंठ।
असंसक्त=राग रहित, वैरागी।
असम्भव=नहीं बने, अनहुआ।
अस्तिनास्ति=है, नहीं।
असार=तुच्छ, झूंठ, दुःखद।
अनाचार=पाप क्रिया।
आस्था=सत्य बुद्धि, श्रद्धा।
आसीन=स्थिर, बैठा हुआ।
अशक्ति=असमर्थ, निर्बल।
असच्छास्त्र=अनात्म विद्या।
अहंप्रत्यय=अहंकार वृत्ति।
अहंकिंचन=मैं का फुरणा।
अक्षोभ=स्थिर, शांतवपु।
अक्षय=नाश रहित।
अज्ञ=अज्ञानी, मूर्ख।
एवम्=इसी प्रकार।

( इ )

इतर=भिन्न, द्वितीय।
इकत्र=इकट्ठा, मिला हो।
इष्टानिष्ट=सुख, दुःख।
ईषणा=इच्छा, वासना।
इदं, सो=यह, सो।
ईप्सित=इच्छा सहित।
इन्दुप्रभा=चंद्र का प्रकाश।

(उ)

उद्वेग=व्याकुलता, क्षोभ।

उत्कृष्ट=श्रेष्ठ, अति उत्तम।
उपमेय=उपमाके योग्य।
उपेन्द्र=छोटा इन्द्र।
उल्लेख=कथन, प्रतीत, भा
उल्लास=प्रसन्नता।
उत्थापन=भावार्थ, अनुवाद।
उरुपर्यंत=जंघा तक।
उच्चाट=उत्थान, उद्वेग।
उग्रतपा=महान् तपस्वी।
उद्देश्य=भाव, आशय।
उत्कीर्ण=खुदी हुई।
उपशम=विशेष शांत।
उदारबुद्धि=ज्ञानी, वैरागी।
उदार आशय=उत्तम ज्ञानी।
उपासना=इष्ट का ध्यान।
उत्थान=बाह्यमुखता, विपर्य्य।
उपलब्धि=प्रतीत, प्रत्यक्ष ज्ञान
उदित=शोभा-युक्त, प्रगट।
उनमीलित=पलक मूँदना।
उन्मेष=पलक खोलना।
उपहत=आच्छादित, मलिन
उन्निद्र=प्रकाश, विकाश।
उग्रदशा=क्रूर अवस्था।
उदरवर्ती=मध्य, अन्दर।
ओ३म्=चैतन्य, चारमात्रायुक्त
उल्लंघन=पार, अतीत।
उज्वल=प्रकाश, शुद्ध।
उदासीन=त्यागी, वैरागी।

( क )

कंदर्य = लोभी, कृपण ।
कृतार्थ = मुक्तस्वरूप, श्रेय ।
कुठार = कुल्हाड़ा ।
कृतकृत्य = कल्याण रूप ।
कृतघ्न = उपकार विनाशक ।
कुण्डा = कांटा, अंकुश ।
कषाय = अंतःकरण के दोष ।
क्रीड़ा = खेल, विलास ।
कुड्डी आदि = भीत, दीवारादि ।
क्रम = रीत, प्रकार ।
कमलडोंडा = कमलगट्टा ।
कलना = फुरणा, कल्पना ।
किंचन = विवर्त, आभास ।
काकताली = दैवयोग, अचानक
कुक्कट = मुर्गा, कुकड़ ।
कक्कूआ = नीच, पापी ।
कंध = भीत, दीवार ।
कला = शक्ति, प्रकाश ।
कुरलातो = विलाप करती ।
क्रूर = खोटा, कठिन ।
क्रत्रम = विलास ।
कल्प = माया, कल्पना ।
कवच = लोहे का जामा ।
केवल = अद्वैत, एक, शुद्ध ।
कृपण = तुच्छ बुद्धि, कंजूस ।
कुहड़ा = कुहल, कुहरा ।
कौस्तुभ = अतिउत्तम रत्न ।
कलंकित = सदोष, पापी ।
काष्ठलोष्ठ = काठ, लोहा ।
कोमल = निर्मल, मृदु ।
कूटस्थ = अचल, अक्रिय ।
कलेजे = निश्चय, हृदय ।
कृत्रिम = नया, बनावटी ।
कलत्र = स्त्री, नारी ।
कल्पना = भेद, फुरणा ।
कल्पांत = प्रलयकाल ।
कोषभंडार = धनका ढकना ।
कुत्सित = खोटा, तुच्छ ।
कलुषता = अज्ञान, तम ।
कदर्थ = खोटे कर्म, पाप ।
कालकूट = विष, हलाहल ।
कल्याणकृत = मुक्त स्वरूप ।
कुम्भक = प्राण निरोध ।
कंज = कांटों का पेड़ ।
कलना काल = भेद कल्पना ।
कल्याण = मुक्ति, श्रेय मार्ग ।
कान्तरंग = उज्वल रंग ।
क्रिया = आरम्भ करना ।
क्रांति = आत्मक तेज ।
कनिष्ट = नीच प्रकृति ।
कदर्यता = कायरता ।

( ख )

खेचर = आकाश चारी ।
खचित = आशक्त, बँधे हुए ।

खुद=विल, सुरंग ।
खंभानी=गोफन ।

( ग )

गरिष्ठ=भारी, गंभीर ।
गारुडी मंत्र=गरुड का स्मरण ।
गूँगा=वाक्‌रहित, अबोला ।
गौण=साधारण, निकृष्ट ।
ग्रीवा=गर्दन, नार ।
गौरव=भारीपन, महत्व ।
गण्डस्थल=गज का मस्तक।
गुहे=पुष्पों का समुदाय ।
गुह्य=गुप्त, चोर ।
गन्धतन्मात्रा=गन्धरूप विषय ।
गन्धर्व नगर=मिथ्या भासित ।
गंभीर=धैर्य्य, अथाह ।
गति=स्वरूप, दशा, कल्याण ।
गतउद्वेग=क्षोभ रहित, अचल ।
गुणवान=ज्ञानी, सदाचारी ।
गरारी=कूप की घड़िया ।
गड्डे=ओला ।
ज्ञप्ति=ज्ञान रूप ।
ज्ञानाभास=मिथ्या ज्ञान ।

( घ )

घटियंत्र=घड़ियों की माला ।
घनीभूत=एक रस, दृढ़ जड़ता ।
घनप्रकृतिक=संसारी मनुष्य ।
घनजाग्रत=वृक्ष, पाषाणादि ।
घट=हृदय, घड़ा ।
घूरम=लवलीन ।

( च )

चंचल=अस्थिर, क्षोभ ।
चोगचंचू=वृथावक्रवादी ।
चिन्मात्र=केवल चैतन्य ।
चिदादित्य=चैतन्य सूर्य ।
चिदाकाश=व्यापक चैतन्य ।
चिदंश= चैतनका अंश।
चेतना=फुरणा, वृत्ति ।
चिज्जड़ ग्रन्थी=देह में आत्मता।
चित्त=अहंकार वासना ।
चैतन्योमुख=चैतन्य से विपरीत
चिदणु=सूक्ष्म चैतन्य ।
चित्ताकाश=चित्त विस्तार ।
चैतता=वासना ।
चिद्मय=चैतन्य रूप ।
चिद्‌परमाणु=सूक्ष्म चैतन्य ।
चित्र की मूर्त्ति=निरहंकार ।
चैतन्यमन=सबोध मनुष्य ।
चिद्घन=एकरस चैतन्य ।
चित्तशक्ति=बाह्य वासना ।
चित्तहत=अहंता नाश ।
चेते=प्रकाशे, स्फूर्ति ।
चित्त से=निश्चय से ।
चक्रवर्ती=स्वतन्त्र राज्य ।
चित्तसंवित=मनो वृत्ति ।
चित्तस्थित=अहंता बाध ॥

चेतनजीव=पुर्यष्टका ।
चपलता=विक्षेप, राग ।
चिदावली=ईश्वर, चिद् ।
चैतन्यता=बाह्यफुरणा ।
चमत्कार=विवर्त, आभास ।
चैतन्यवपु=चिदाभास ।
चिदानन्द=चैतन्य, सुख ।

( ज )

जड़=अचैतन, अफुर ।
जर्जरीभूत=क्षीण, दशा ।
जिज्ञासु=ज्ञानकी इच्छायुक्त ।
जलाभास=मिथ्या जल ।
जीवन्मुक्त=जीतेमुक्त निश्चय ।
जागतीज्योति=स्वयं प्रकाश ।
जगत उड़ान=यज्ञ विशेष ।
जड़=अविचारी, मूर्ख, अचेत ।
जकड़ा = वंधा हुआ ।
जीर्ण=क्षीण दुर्गति ।
जनेन्द्र=बुद्ध अवतार ।
जाग्रत=ज्ञान, बोध ।
जठर=उदर, मध्य ।
झष=मछली, मीन ।
झिल्ली=जरायुज चर्म ।
झाग=जल बुद्बुदा ।

( त )

तदनन्तर=तत्पश्चात्, पीछे ।
तुषार=कुहरा, ओस ।
तिर्यग=नीचयोनि, सर्पआदि ।
तुर्यापद=चैतन्य वस्तु, आत्म ।
तादात्म्य=कल्पितभेद, अभेद ।
तरुवरे=आकाश के वृक्ष ।
तिरोभाव=ढकागया, आच्छादित
तन्मात्रा=शब्दआदि विषय ।
तत्त्वमात्र=वस्तु रूप, ब्रह्म ।
तुर्या=कमल तन्तु ।
तीव्र=दृढ़, परिपक्व ।
तृप्ति=आनन्द, संतोष ।
तृष्णा=विपर्यय, वासना ।
तूष्णी=मौन, चुप होना ।
तज्ञ=तत्त्वज्ञानी, विद्वान् ।
तप=योग, स्वधर्म, दम, ज्ञान ।
तेंदुये=ग्राह, नाके ।
तंत्री=बाजा, बीणा ।
तन्मय=सोऽहं स्वरूप ।
तीनसत्ता=तीनों दृष्टि ।
तद्रूप=सोई रूप, तदाकार
त्याग=बाध, उदासीनता ।
तनुता=सूक्ष्मता, अल्पता
तुच्छदृष्टि=मिथ्या ज्ञान ।
तस्कर=चोर, डाकू ।
तूष्णीभूत=अफुर, तुर्यापद ।
तीव्र संवेदन=दृढ़ज्ञान, स्फूर्ति ।
तामस,तामसी=मूर्ख, पापी ।

## ( द )

दुकाल = बुरा समय, दुर्भिक्ष ।
दुर्विज्ञेय = कठिनता से जानना ।
दीर्घदर्शी = ज्ञानी, सूक्ष्म वृत्ति ।
दैव = प्रारब्ध, ईश्वर इच्छा ।
दृष्टांत = उपमा, सदृश, तुल्यता ।
दृार्ष्टांत = उपमेय, सिद्धान्तार्थ ।
दृग = दृष्टा, चक्षु, इन्द्रिय ।
दिगंबर = नंगा होना ।
दृश्य = जगत, देखने योग्य ।
दश गातर = यज्ञ विशेष ।
दिनकर = सूर्य, दिनेश ।
दृश्याभास = जगत् का आभास ।
दावानल = बन की आग ।
द्रव्य = पदार्थ, वस्तु ।
दीर्घसूत्री = विचारवान् ।
दुर्विज्ञेय = जानना कठिन ।
दुर्बोध = अज्ञान, मूर्खता ।
दृष्टिरेवसृष्टि = चिदवृत्ति जगत् है
द्वारपाल = शम, सन्तोष आदि ।
दृष्टा = जीव, साक्षी ।
दीर्घ = विस्तार, विशाल ।
देव = प्रकाशरूप चैतन्य, इष्ट ।
दोषदृष्टि = ग्लानि, विपर्यय ।
दुष्कृत = पाप, बुरी चेष्टा ।
दिव्यवर्ष = सहस्र साल ।
दुराशा = अज्ञान, दुर्वासना ।
दुर्वासना = ध्येय वासना ।
द्रवीभूत = पिघल जाना ।
दैवकल्पित = प्रारब्ध, ईशइच्छा ।
देही = देहका स्वामि, आत्मा ।
देवसत्ता = चैतन्य सत्य ।
देवदेवेश = देवों का देव
देवार्चन = आत्म पूजा, चिद्अर्चा
दलदल = कीच, बन्धन
दग्ध = वाध, पजरते ।
दीन = दुखी, बिचारा ।

## ( ध )

ध्येयवासना = तीन विपर्यय ।
धैर्य्य = धीरज ।
धूर्तता = अज्ञान, मूढ़ता ।

## ( न )

निशा = रात्रि
नटनायक = नटों का स्वामी ।
निमित्त = कारण, हेतु ।
निर्वयव = निराकार, सूक्ष्म
निर्वाण = अफुर, अचल ।
निर्वेद = वैराग्य जन्यज्ञान
निर्वाण = अफुर ।
निरूपण = कथन, आख्यान ।
नीति = मर्यादा, ईशइच्छा ।
नाम = सत्य, परब्रह्म
निमेष = पलकों का मूंदना
निर्योगक्षेम = आसक्ति का त्याग

निरामय = निर्दुःख, आनन्द ।
निर्वासनिक = वासना रहित ।
नियामक = प्रेरक, नियंता ।
निर्वपुसत्ता = निराकार वस्तु ।
निर्बीज = अकारण, मिथ्या
नाहींकीनाहीं = अन हुआ ।
नेयवासना = बाह्य इच्छाआदि ।
निरस = असत्य, दुखरूप ।
नवनीनिवत् = माखनसमान ।
निर्विकल्प = अभेद. संशयरहित ।
निरंजन = माया से अतीत ।
निरंतर = विनाभेद, एक रस ।
नानत्व = भेद, द्वैतता ।
निरंध्र = छिद्रों रहित ।
निर्मायक = माया से अतीत ।
नीलोत्पल = नीलाकमल ।
निष्काम = अहंताआदि रहित ।
नायक = स्वामि.सरदार ।
निराभास = जगकेआभासविना ।
नीच = अधम, अज्ञानी, कुजाति ।
निरालम्ब = साक्षी.अविषय ।
निष्कलंक = अज्ञानरहित, निर्दोष
निष्किञ्चन = अफुरनिराभास ।
निस्सन्देह = संशय से रहित ।
निस्पृही - निर्वासनिक, निरेच्छत
निर्मनन - मननरहित, निःसंकल्प
निरीह - क्रियाहीन अफुर ।
निराशपद - शुद्धब्रह्म ।

निग्रह = बाध अन्तर्मुख ।
निस्संवेदन = अफुर, निश्चय ।
निपुण = चतुर, दक्ष. विद्वान् ।
निष्पाप = ज्ञानी, निर्मल हृदय ।
निरादर = खण्डन. बाध. अपमान
निराभास = विश्वकेभाससेरहित
निरद्वय = अभाव द्वैतपना ।
नृत्तकी = वैश्या, नाचने हारी ।
निर्देश = निराकार, अकथ ।
निःसंग = निर्लेप, संग रहित ।
निर्द्वन्दसत्ता = अद्वैत, अचलवस्तु
नष्टवासना = निष्काम ज्ञानी ।
निष्किचनपद = अफुर, शुद्धब्रह्म ।
निरावर्ण = अज्ञान रहित ।
निर्मान = गर्वादि रहित नर ।

( प )

पुनरुक्ति = बारम्बार कथन ।
पुरुषार्थ — मोक्ष आदि साधन
पारगामी = ब्रह्मज्ञानी, विद्वान् ।
पुतरी = पिंजर पुतली ।
पद्म = कमल ।
पुरुषोत्तम = परब्रह्म श्रेष्ठजन ।
परमसार = श्रेष्ठ, सत्यस्वरूप ।
परायण = अर्पण, आश्रय ।
परमेश्वर = शुद्ध ब्रह्म, ईश्वर ।
परमविश्राम = ज्ञान, समाधि ।
परमस्वतः = सनातन, अनादि ।
परमपिता = असलीरूप, कारण

पद्म=कमल
पारगामी-विज्ञानी ।
पिंजर—समुदाय, पींजरा
प्रबुद्ध=ज्ञानी,जाग्रतत्तर ।
प्रबोध = जाग्रत,ब्रह्मज्ञान ।
प्रत्येक = हरएक, भिन्न २ ।
पातंजल = योगशास्त्र
प्रतियोगी = विरोधी धर्म ।
परसंवेद्य = दूसरा जानें ।
परमार्थ = कल्याण, परम इष्ट ।
पारंगगत = जाननेवाला
परिणाम = फल,विकार ।
परावर = परमात्मा
प्रत्यक —वृत्तियों का ज्ञाता
प्रतिभास—प्रतिबिंब ।
प्रतिलोम वाह्यफुरणा
पतन = पड़ना, गिरना ।
पट = रेशम वस्त्र
परस्पर = आपस में ।
पुरेण —गूजर
अपरिच्छिन्न—अल्प देशी ।
पुरीष = विष्ठा, दुर्गन्ध
पुर्यष्टका = अष्टवस्तुओंका समूह
पीन = दृढ़,मोटा, वृत्तमूठ
पुण्डरीकाक्ष = विष्णुदेव
पिण्डाकार = साकार,रूप ।
पुण्य = आत्म दर्शी

पूर्वार्द्ध = प्रथम भाग
परमार्थघन = एकरस ब्रह्म ।
परादेश = अंगूठा मात्र
पाषाणवंत् = अफुर,निरहंकार ।
परमेष्ठी = ब्रह्मा,आनन्दयुत ।
परमशुद्ध = निर्मल, असंग ।
पचाती = पकाती, विलय करे ।
पदमनियां = कमलनियां ।
पूर्वापर = प्रथम,उत्तर ।
पैलव = चंचल, मोटा ।
परावर = शुद्ध, ब्रह्म, आत्म ।
परमाकाश = श्रेष्ठपूर्ण ।
प्रादुर्भाव = प्रगट, उदय
प्राकृतक = संसारी मनुष्य ।
प्रतिवाय = पाप, उलटा कर्म ।
परमाकाश = महान चैतन्य ।
परअपर = निर्गुण सगुणब्रह्म ।
परममौन = अद्वैत निश्चय ।
पद = वस्तु, अवस्था ।
प्रसन्नता = शुद्धि, प्रसाद ।
प्रधान = श्रेष्ठ,महंत,संत ।
प्रादुर्भाव = प्रगट, प्रत्यक्ष ।
प्रहार = ताड़ना, चोट ।
प्रमाद = भूल, विस्मृत ।
प्रमाण = सत्यवृत्ति, करण ।
प्रादेशमात्र = अति समीप ।
प्रकृताचार = वाह्यव्यवहार

प्रतिपादन = कथन वर्णन ।
पुनश्चरण=प्रायश्चित ।
पतवार=केवट, मलाह ।
पत्तन=नदीका घाट, राजमार्ग ।
प्रतिवाक्य=एकवाक्य (शब्द)
प्रतिपद=वर्ण समुदाय ।
पतितप्रवाह=प्रारब्ध अनुसार ।
प्रतियोगी=विरोधी, अभाववाला
प्रगटसोते = आत्म विश्रामी ।
प्रत्यय = वृत्तियां, निश्चय ।
प्रतिभा = प्रतीत, आभास ।
प्रफुल्लित=आनन्दी, विकाश
प्राणचिन्ता = प्रणायाम, तप ।
प्रयत्न=पुरुषार्थ, विचार ।
प्रणमय=लय, अभेद हुए ।
प्रसाद=गुरु की कृपा ।
प्रकाश = ज्ञान रूप सूर्य ।
प्रकृति=संस्कार युक्त ।
प्रसन्न = स्फुरण, शुद्ध, प्रगट ।
परात्पर = माया से परे शुद्ध ।
प्रयत्न=यत्न करना ।
प्रभा = प्रतीति, प्रकाश ।

( ब )

बट = बड़ी, बृक्ष ।
बड़वानल = समुद्र की अग्नि ।
विदारण=निष्ठ, चूर्ण होना ।
बली=बलवान, समर्थ्य, बेल ।
वेधी = दबी हुई, संयुक्त ।
बाह्यमुख = संसारकी ओरलगा
ब्रह्मवेत्ता = ज्ञानी, विद्वान् ।
ब्रह्मविद्या=ब्रह्म ज्ञान ।
विवाद=झगड़ा, विशेष कथन ।
वसुधापति=भूपति, नरेश ।
बट्टा=डला, मिट्टी के ढिले ।
विह्वल=व्याकुल, विपर्यय ।
बीतकल्मष=निष्पाप ।
बांधव=सुखदाई, बन्धु ।
ब्रह्ममय=व्यापक रूप, पूर्ण ।
बीजलक्ष्मी=मूल सम्पदा ।
वज्रभूत=दृढ़, एक रस ।
बालबुद्धि=अज्ञानी मनुष्य ।
वाच्यवाचक=कहना, कहनेवाला
बोधखिला=ज्ञान उदय ।
ब्रह्महृदय=ब्रह्म स्वरूप, निश्चय ।
वीतराग=निर्मोही, ज्ञानी ।
वाह्यसुख—अविचारी नर ।
ब्रह्मलक्ष्मी=ब्रह्म विद्या ।
वागेश्वरी=गौरी, वाकपति ।

( भ )

भटकटैया=कटहरी ।
भावार्थ = यथार्थ अर्थ ।
भावाभाव = सत्यासत्य ।
भूत = रूप, तत्व, पिशाच ।
भूचर = भूमि के विचरने हारे ।
भृत्य = नौकर, सेवक ।
भवमूर्ति = कल्याण रूप ।
भूताकाश = बाह्यआकाश ।

भूलोक = पृथ्वी, मृत्युलोक ।
भावतभावना = देहाभिमान ।
भूसुर = ब्राह्मण ।
भ्रम = संशय, विपर्यय ।
भावित = प्रिय, भावनादि ।
भगवान = सर्वशक्ति, षट भगी
भग्न = नष्ट, टूट जावे ।
भावितभाव = सत्यमें भावना ।
भूमिका = अवस्था, दशा ।

( म )

मरीचका = मरूभूमि, मृगतृष्णा ।
मार्जन = शुद्ध करना, मांजना ।
मन = संकल्प, वासना ।
मंजरी = हरयावळ, घास ।
मार्जन = शुद्ध करना, बाध ।
माखी = शहद, मक्खी ।
मानसिक = मनकी वृत्ति फुरणा ।
मत्त = बावरा, मस्ताना ।
मनस्कार = द्रष्टा, प्रमाता ।
मोक्ष = सुखप्राप्ति, दुःखनाश ।
मण्डल = गोलाकार ।
महादृष्ट = तीव्रतर प्रारब्ध ।
महोदय = सर्वका स्वामि, प्रगट
मनोनाश = मनका बाध, अफुर
मानसीदुःख = चिंतादि वासना
महतत्व = सामान्य अहंकार ।
महात्याग आदि = विपर्यय नाश
मुखकान्ति = अन्तरशोभा ज्ञान
मनकात्रश = एकाग्रता, बाध ।

मिश्रित = मिला हुआ, सहित ।
मुक्त = अकर्ता, अभोक्ता, शुद्धि ।
मित्राई = मित्रभाव, प्रेम ।
मर्कटवत = बंदर की नाई ।
मोक्षउपाय = मुक्ति के साधन ।
मण्डलेश्वर = छोटा राजा ।
माता, मान, मेय = त्रिपुटि
मननभाव = बाह्य सुखता ।
मरजाना = शव, मुर्दा ।
महालक्ष्मी = स्वमहिमा ।
मनशुद्ध = निश्चय, सत्यभाव ।
मोहनष्ट = विपर्य्य नाश ।
मध्यभाव = अन्तर, बाह्यदशा
महाकल्प = ब्रह्मा की आयु ।
मलिनवासना = ध्येय वासना ।
मौन = अफुर, परमसमाधि ।
मृतकवत = अज्ञानी, बुरी दशा
महाकाश = व्यापक, पूर्णचिद् ।

( य )

योगराज = अभेद दृष्टि, ज्ञानयोग
युक्तार्थ = सम्यक् अर्थ ।
यथाभूत = यथार्थ रूप ।

( र )

रूपका = भयका कारण ।
रमणीय = सुन्दर, मनमोहन ।
रस = सत्य, सुख वृद्धि ।
रन्ध्र = छिद्र, भेद, व्यवधान ।
रक्तका = लालडी, गुंजा ।

रसदेना = आनन्द दाता ।
रागद्वेष = आशक्ति व विरोध ।
रञ्जित = प्रसन्न, आनन्दित ।
राज्य = स्वतंत्रता, ऐश्वर्य ।
रंचक = अल्प, थोड़े मात्र ।

( ल )

लीलामात्र = असत्य, खेल ।
लवाकर = थोड़ा, किंचित ।
लक्षण = स्वरूप, चिह्न ।
लीन = बाध, विलय ।
लक्ष्यस्वरूप = शुद्ध ब्रह्म ।
लव = किंचित, प्रीति ।
लक्ष्यवान् = ब्रह्मज्ञानी ।
लघुचित = अज्ञानी, मूर्ख ।
लोलुप = रागी, चपल ।

( व )

वेदत्रयी = तीनों वेद ।
विकृति = वैराग्यवान, उद्वेगी ।
विलास = खेल, लीला, झूठ ।
विपर्य्य = दुर्बुद्धि, अहंतादि ।
विरस = असत्य, दुःखरूप ।
विकृति = जिज्ञासु, वैरागी ।
व्यतिरेक = अलग, भेद ।
विदृतवेद = वेदों के ज्ञाता ।
वियापनी = विषयनी बुद्धि ।
विपर्य्य = उलटा ज्ञान ।
विगतज्वर = संताप रहित ।
व्याधि = देह पीड़ा, ज्वरआदि ।
वासना = फुरणा, इच्छा ।
विशाद = खेद, उद्वेग ।
विज्ञानघन = एक रस चैतन्य ।
व्यतिक्रम = उलटे प्रकार ।
विभाग = भेद, बाँटना ।
विस्फुलिंग = अग्नि चिनगारी
विश्रांन्त = आत्मस्थित ।
विरूप = विरुद्ध रूप ।
विवर्त = चमत्कार, भ्रम ।
विभूति = वैभव, सम्पदा ।
वास्तव = यथार्थ, सत्य ।
वेदना = फुरणा, बाह्यज्ञान ।
वासनाक्षय = विपर्य्य रहित ।
व्यतिरेक = भेद, जुदा ।
वैवस्वत = सूर्य का पुत्र(धर्मराज)
विषम = कठिन, बुरा ।
व्यवच्छेद = भेद, परिच्छिन्न ।
वासक = वासना करने हारा ।
व्यवच्छेदक = भेद करने वाला ।
विगतज्वर = संताप रहित ।
विकाशवान् = प्रफुल्लित ।
विचित्र = अनेक प्रकार ।
विस्मरण = भूल जाना ।
विशोक = निस्संशय, अचिंत ।
विराटरूप = प्रथम मात्र ।
व्युत्थान = उत्थान, संशय ।
विक्षेप = चंचलता, उत्थानता ।

वेष्टित=युक्त, मिलित ।
वारिज=जल से हुआ ।
वरदायक=कल्याणदायक ।
विकल्पजाल=भेद, विभ्रम ।
विरक्त=वैरागी, उदार ।
विगतस्नेह=राग रहित ।
वेदन=ज्ञान, स्फुर्ति ।
व्यवधान=भेद, पड़दा ।
वपु=स्वरूप, देह ।
विभुता=व्यापकता, महिमा
विद्यमान=नित्य, सन्मुख ।

( श )

श्रृंगीगण=शिवों का शिष्य ।
शांत सुख=अक्षोभ, आनन्द ।
शम=वासना रहित ।
शून्य=जड़, अभाव, रीता ।
शेष=बाकी, बचा हुआ ।
शिष्य=साधनवाला,शिक्षा योग्य
शमादि=षट सम्पत्ति ।
शरद्काल=क्वार, कार्तिक ।
शार्दूल=सिंह, श्रेष्ठ, विज्ञ ।
श्रमित=हरारत, थकावट ।
शीतल=शांत, तृप्त, आनन्द ।
शक्ति=समर्थ्य, कला ।
शोभनीक=भलाई, सुन्दरता ।
शंकर=कल्याण स्वरूप ।
शुद्ध बुद्धि=निर्मल ज्ञान सहित ।
शंका त्याग=संशय रहित ।
शिञ्जरा=पींजरा
शीघ्रसंवेग=तीव्र फुरणा ।
शिवकीओर=कल्याण की ओर
शिलाका=छैनी, सलाई ।
शून्यबुद्धि=विचार रहित ।
षड्ङ्गोयुक्त=छै अङ्गों सहित ।

( स )

सकाश=द्वारा, अपेक्षा ।
सम्पन्न=युक्त सहित ।
सपेक्षक=इच्छासहित ।
स्फूर्ति=भासना, ज्ञान ।
सारग्राही=सार ग्राहक
सद्गुरु=सत्य का उपदेशक ।
समवाय=उपादान कारण ।
स्वभाव=स्वरूप, प्रकृति ।
समाधि=एकज्ञान, निरोध ।
सूर्यपदा=शिव का स्नेही
स्वयम्भू=आपही से होवे ।
सद्भाव=सच्चा होना ।
सिद्धान्त=निचोड़, अर्थ ।
सर्ग=सृष्टि, उत्पत्ति ।
सुहृद=निष्काम मित्र ।
साधक=साधन करने हारा ।
संहिता=ग्रन्थ, समूह ।
साधन=कारण, सामग्री ।
सिद्धता=मन कीशुद्धी,सिद्धियां
स्वप्नान्तर=स्वप्न में और स्वप्न ।
स्फार=प्रकाश रूप ।

सुजन = सज्जन, निष्काम ।
समाधान = ब्रह्म अभ्यास ।
समता = समदृष्टि ।
स्वच्छ = निर्मल, विपर्य्य रहित ।
सूक्ष्ममन = विचार वृत्ति ।
स्निग्धि = द्रवीभूत, रस सहित ।
सकुचना = अंतर्मुख, संकोच ।
सद्गुरु = ब्रह्मवेत्ता, हितोपदेशक
स्वादि = आनन्द, रस ।
समतत्त्व = एक रस आत्मा ।
समवृता = समूह ।
सूत्रआत्मा = हिरण्यगर्भ ।
समवाय = उपादान कारण ।
समानसत्ता = व्यापकसत्यआत्मा
समता = समदृष्टि, समानता ।
स्वामि = कर्त्ता, ईश्वर, मालिक ।
समवृत्ति = समान, निश्चय ।
स्वस्थक = स्थिर, निष्ठावान ।
सोम = गंभीर, अचल ।
स्पर्श = लेप, छेप, संबन्ध ।
सुषुप्ति = अद्वैत दृष्टि, गाढ़ निद्रा
समआकार = अचंचल ।
सुदृष्टि = श्रेष्ट दृष्टि ।
साक्षात् कार = दृढ़ निश्चय ।
स्वभाव = स्वरूप, प्रकृति ।
सर्वभोक्ता = अधिष्ठान, परमात्मा
सम्यक् = यथार्थ, ठीक ।
समप्रतिमा = इकट्ठी प्रतीत ।

समष्टता = पूर्णता, समूह ।
स्वस्थ = निर्विकार, अचल ।
समभाव = एकता, समता ।
संयुक्त = सहित, सम्पन्न ।
सत्यपद = परमार्थ वस्तु ।
सारथी = जिज्ञासु की दृष्टि ।
समानसत्ता = ज्ञान की दृष्टि ।
सन्मय = सत्यरूप
समाहित = निश्चयवृत्ति, ध्यानी
स्वप्नवत् = भ्रमरूप, मिथ्या ।
साक्षी = प्रकाशक, ज्ञाता ।
स्निग्ध = रसवाला, कोमल ।
सावधान = स्वरूपका चिंतन ।
सर्वज्ञ = सर्वका ज्ञाता, साक्षी ।
सर्वशक्ति = अधिष्ठान, ईश्वर ।
सत्तासामान्य = व्यापकसत्यता ।
स्वाभाविक - अकारणअपरिच्छिन्न
समाधान = निदिध्यासन समाधि
स्थित = निष्ठा, स्थिर, बुद्धि
स्वयंभू - अपने से ही होवे ।
स्वसंवेद = आपही जाने ।
समेटा = लय, बाध ।
सुषुप्तिमौन - अद्वैत निश्चय ।
सेवनेयोग्य = कर्तव्य, सेव्य ।
सावयव = साकार
सद्भाव = एक रस, समदृष्टि ।
सच्छास्त्र = वेदान्त शास्त्र ।
सविकल्प = भेदसहित, संशय

सौभाग्य = श्रेष्ठ भाग ।
सलेप = लिपायमान
सुहृद = निष्काम संत ।
स्थावर = जड़, अचल ।
साक्षात्कार = प्रत्यक्ष, निश्चय
समवाही = जाग्रतकीनाड़ी

( सं )

स्पंद निस्पंद = चल, अचल
संस्कार = कर्म वासना ।
संहिता = समूह, ग्रन्थ ।
संकुचित = शोकातुर, संकोच
सदोष = दोष सहित ।
संघर्षन = घिसने से ।
संस्कृतबुद्धि = विचार शील ।
संवेदन = फुरणा, विशेष वेग ।
संज्ञा = गिनती, नाम ।
संकल्प = भावना, वासना ।
संचारक = प्रवर्तन ।
संस्थित = ठीकस्थित ।
संप्रदानादि = षट कारक ।
संसरना = फुरणा, वासना ।
सन्मात्रसत्ता = सत्यवस्तु ।
संवित् = वृत्ति, ज्ञप्ति, ज्ञान ।
संवेग = फुरणा शीघ्र, वेग ।
संत = श्रेष्ठ, साधु ।
संपुट = कोष, खजाना ।
संग = तादात्म्य संबन्ध ।
संतुष्ट = आनन्दित, तृप्त ।
संयोग = अभेद संबन्ध ।
संसक्त = दृढ़ राग, मोह ।
संशय = दो कोटि का ज्ञान
संवितसार = चैतन्य वस्तु ।
संबन्ध = तादात्म्य संग ।
हृदय = स्वरूप निश्चय, मांसपिंड
हेय = त्यागने योग्य
क्षय = नाश जीर्ण

( ज्ञ )

ज्ञाता = जानने वाला, ज्ञानी ।
ज्ञान = बोध, निश्चय ।
ज्ञातज्ञेय = जाननेवाला ।
ज्ञेय = जानने योग्य ब्रह्म ।
ज्ञाननिष्ठा = ब्रह्ममें स्थिति ।
ज्ञप्तिरूप = चैतन्य वृत्ति ।
ज्ञानादिगुण = चार साधनादि ।

---

बाबू मनोरंजन के प्रबन्ध से भारतबन्धु प्रेस अलीगढ़ में छपा । नं० ६८८०-३६ ।

# भिन्न २ पदों के लक्षण

आवर्णशक्ति–नहीं है, नहींभासे
अज्ञान–अनादि, ज्ञान नाशक।
ज्ञान–अभेद निश्चयात्मक।
माया–स्वाश्रय अनाच्छादिक।
अविद्या–स्वाश्रय आच्छादिक।
वृत्ति–अंतःकरणआदिका परि०
साक्षी–असंग हुआ प्रकाशे।
वाक्य–आकांक्षायोग्यतावाला।
ब्रह्म–व्यापक चैतन्य।
आत्मा–सबका वास्तविकस्वरूप
योगवृत्ति–अवयवों का शक्ति।
रूढ़ी–समुदाय शक्ति।
लक्षणा–शक्य संबन्धी।
अर्थवाद–वस्तु प्रशंसा।
सन्यास–सर्व कर्म त्याग।
अध्यस्त–कल्पित वस्तु।
करण–असाधारण कारण।
स्मृति–संस्कार जनित ज्ञान।
जीव–अविद्या विशिष्ठि।
संशय–दो विरोधी ज्ञान।
निश्चय–संशय रहित ज्ञान।
निरोध–मनोवृत्ति का संयम।
ईश्वर–जगत नियंता।

प्रमा–यथार्थ ज्ञान।
अभ्यास–पुनः २ आवृत्ति।
आकाश–एक, विभु, नित्य।
अहंकार–गर्वरूप राजसवृत्ति।
तर्क–अनिष्ट चिंतन।
योग्यता–अबाधित अर्थ।
दुःख–प्रतिकूल ज्ञान।
कर्म–क्रिया जनित।
सामान्य–नित्य, एक व्यापक।
उपरति–प्राप्त हुए का त्याग।
वैराग्य–इच्छा का त्याग।
ब्राह्मण–संतोष युक्त ज्ञानी।
भ्रम–विपरीत अनुभव।
प्रेम–निरंतर प्रीति।
दया–कृपा।
क्षमा–सहन शीलता।
हृदय–निश्चय, वास्तविकरूप।
अन्तर–प्रत्यगात्म, ब्रह्म।
ध्येयवासना–विपर्यय ज्ञान।
नेय–व्यवहारिक वासना।
देव–प्रकाश, चैतन्य,।
अद्वैत–भेद से रहित।
शांत–अज्ञान रहित निर्विकार।

# ॐ ३६वीं—निरालम्बोपनिषत् का सार

प्रश्न—कैवल्य पदको प्राप्ति के लिये ब्रह्म से आदि संन्यास तक सब का स्वरूप मैं जानना चाहता हूँ क्रम से कहिये।
शुद्ध, शान्त, चैतन्य (ब्रह्म) है। माया का प्रेरक सर्वज्ञ (ईश्वर) अविद्या से आवृत अल्पज्ञ (जीव) संसारका कारण (प्रकृति) नाम, रूप, क्रियात्मक (जगत्) व्यवहार की उपयोगी (जाति) धर्मकी साधक क्रिया (कर्म) गर्व व फल रहित क्रिया (अकर्म) अद्वैत ब्रह्म का बोध (ज्ञान) ब्रह्म, आत्मा में परदा (अज्ञान) शान्त वृत्ति में भासित (सुख) प्रतिकूलता का ज्ञान (दुःख) सात्विक गुण का स्थान (स्वर्ग) तामसी प्रकृति जन्य (नरक) करता, भोक्ताका अभिमान (बन्ध) अज्ञानतत्कार्यका नाश (मोक्ष) सदोपदेशक ज्ञानी (गुरु) साधनों वाला अधिकारी (शिष्य) वेद व ब्रह्मका ज्ञाता (विद्वान्) विचार रहित भोग्यासक्त (मूढ़) मन इन्द्रियोंको जीतना (तप) चंचलतारूप वृत्तियाँ (विक्षेप) शान्त व नम्रता आदि (ग्राह्य) जगत् के भोग्य सुख (त्याज्य) सच्चिदानन्द ब्रह्म (परमपद) परमगति का साधन (सन्यास)

मूल-मन्त्र-महावाक्यार्थानुभव ज्ञानाद्ब्रह्मैवाहमस्मीति, निरालम्बंसमाश्रित्य सालम्बं विजहातियः स सन्यासी च योगी च कैवल्य पदमश्नुते (मैं ही ब्रह्म हूँ महावाक्यों के ज्ञान द्वारा निराधार ब्रह्म को आश्रय करके जो दृश्य का बाध (परित्याग) करता है वही सच्चा सन्यासी, जीवन्मुक्त, जगत्पूज्य, राज्य योगी, परम हंस, अवधूत, ब्रह्मदेव होता है)

(श्रुति) ब्रह्म विद्ब्रह्मैव भवति (ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म ही होता है (स्मृति) ज्ञानी त्वात्मैवमेमतम् (ब्रह्म ज्ञानी मेरा आत्मा (स्वरूप) है यह सर्वोच्च पद तो योग वासिष्ठ के सादर निरंतर अभ्यास करने से शीघ्र प्राप्त हो सकता है अतः योग वासिष्ठ का बोध (भाषार्थ) लिखा गया है।

अनु० स्वा० ब्रह्मानन्द।